'अ'-भाग बहुविकल्पात्मकः प्रश्नाः (25 अङ्काः)
अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

अध्याय — 1 सन्धि-कार्यम्

स्मरणीय बिन्दु

सन्धि (परःसन्निकर्षः संहिता)—

सन्धि का अर्थ है—मेल अर्थात् अत्यन्त समीपवर्ती दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं। यथा-विद्यालयः = विद्या + आलयः। इस उदाहरण में आ + आ इन वर्णों का मेल होकर एक 'आ' रूप बना, तो यही सन्धि है।

अन्य उदाहरण—

पौ + अकः = पावकः। शिव + छाया = शिवच्छाया।

(i) सन्धि के परिवर्तन में कहीं पर दो अक्षरों के स्थान पर नया अक्षर आ जाता है; जैसे—रमा + ईशः = रमेशः।

(ii) कहीं पर अक्षर अथवा विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे—छात्राः + गच्छन्ति = छात्रा गच्छन्ति

(iii) कहीं पर दो अक्षरों के बीच में एक नया अक्षर आ जाता है; जैसे—धावन् + अश्वः = धावन्नश्वः।

सन्धियों के भेद—जिन दो व्यवधान रहित वर्णों में हम सन्धि करते हैं, वे वर्ण प्रायः अच् (स्वर) और हल् (व्यञ्जन) होते हैं। कभी-कभी पहला विसर्ग और दूसरा स्वर या व्यञ्जन हो सकता है, इसलिए सन्धियों के निम्नलिखित भेद हैं—

(1) अच् सन्धि (स्वर सन्धि) (2) हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि) (3) विसर्ग सन्धि

(1) अच् (स्वर) सन्धि

स्वर का स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन या विकार होते हैं, उन्हें स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे—भो + अति = भवति। राम + आयनम् = रामायणम्। स्वर वर्णों में होने वाले परिवर्तन की विभिन्नता के कारण स्वर-सन्धि के निम्न छह भेद हैं—(i) दीर्घ सन्धि (ii) गुण सन्धि (iii) वृद्धि सन्धि (iv) यण् सन्धि (v) अयादि सन्धि (vi) पूर्वरूप सन्धि।

1. दीर्घ संधिः (अकः सवर्णे दीर्घः)

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ अथवा ऋ से परे सवर्ण ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ अथवा ऋ होने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ वर्ण हो जाता है।

नियम—(क) अ या आ के बाद अ या आ होने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ 'आ' हो जाता है; जैसे—

	सन्धि विच्छेद :		सन्धिः	नियम
1.	मृग + अङ्कः	=	मृगाङ्कः	(अ + अ = आ)
2.	सुख + अर्थी	=	सुखार्थी	(अ + अ = आ)
3.	मुरा + अरिः	=	मुरारिः	(आ + अ = आ)
4.	कदा + अपि	=	कदापि	(आ + अ = आ)
5.	धन + आदेशः	=	धनादेशः	(अ + आ = आ)
6.	विद्या + आतुरः	=	विद्यातुरः	(आ + आ = आ)

नियम—(ख) इ या ई के बाद 'इ' या 'ई' होने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ 'ई' हो जाता है; जैसे—

	सन्धि विच्छेदः		सन्धिः	नियम
1.	कवि + इन्द्रः	=	कवीन्द्रः	(इ + इ = ई)
2.	अधि + इत्य	=	अधीत्य	(इ + इ = ई)
3.	मुनि + ईशः	=	मुनीशः	(इ + ई = ई)
4.	श्री + ईशः	=	श्रीशः	(ई + ई = ई)

5.	नदी + ईश्वरः	=	नदीश्वरः	(ई + ई = ई)
6.	मही + इन्द्रः	=	महीन्द्रः	(ई + इ = ई)

नियम–(ग) उ या ऊ के बाद 'उ' या 'ऊ' होने पर दोनों के स्थान में दीर्घ 'ऊ' हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	भानु + उदयः	=	भानूदयः	(उ + उ = ऊ)
2.	गुरु + उपदेशः	=	गुरूपदेशः	(उ + उ = ऊ)
3.	लघु + ऊर्मिः	=	लघूर्मिः	(उ + ऊ = ऊ)
4.	सु + उक्तिः	=	सूक्तिः	(उ + उ = ऊ)
5.	लघु + उपदेशः	=	लघूपदेशः	(उ + उ = ऊ)
6.	सिन्धु + ऊर्मिः	=	सिन्धूर्मिः	(उ + ऊ = ऊ)

नियम–(घ) ऋ के बाद 'ऋ' होने पर ऋ के स्थान पर दीर्घ 'ॠ' हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	मातृ + ऋणम्	=	मातॄणम्	(ऋ + ऋ = ॠ)
2.	पितृ + ऋद्धिः	=	पितॄद्धिः	(ऋ + ऋ = ॠ)
3.	होतृ + ऋकारः	=	होतॄकारः	(ऋ + ऋ = ॠ)

2. गुण संधिः (आद्गुणः)

संस्कृत व्याकरण के अनुसार यदि अ, आ के बाद इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ इनमें से कोई वर्ण हो तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर्, तथा अल् हो जाते हैं।

नियम–(क) अ, आ के पश्चात् इ, ई होने पर दोनों के स्थान पर 'ए' हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	नर + इन्द्रः	=	नरेन्द्रः	(अ + इ = ए)
2.	लता + इव	=	लतेव	(आ + इ = ए)
3.	उमा + ईशः	=	उमेशः	(आ + ई = ए)
4.	नर + ईशः	=	नरेशः	(अ + ई = ए)

नियम–(ख) अ, आ के पश्चात् उ, ऊ होने पर दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	सूर्य + उदयः	=	सूर्योदयः	(अ + उ = ओ)
2.	पर + उपकारः	=	परोपकारः	(अ + उ = ओ)
3.	वेद + उक्तिः	=	वेदोक्तिः	(अ + उ = ओ)
4.	महा + उत्सवः	=	महोत्सवः	(आ + उ = ओ)

नियम–(ग) अ, आ के बाद ऋ होने पर ऋ वर्णों के स्थान पर 'अर्' हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	कृष्ण + ऋद्धिः	=	कृष्णर्द्धिः	(अ + ऋ = अर्)
2.	देव + ऋषिः	=	देवर्षिः	(अ + ऋ = अर्)

नियम–(घ) अ, आ के बाद ऌ होने पर दोनों वर्णों के स्थान पर 'अल्' हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	तव + ऌकारः	=	तवल्कारः	(अ + ऌ = अल्)
2.	मम + ऌकारः	=	ममल्कारः	(अ + ऌ = अल्)

3. वृद्धि संधिः (वृद्धि रेचि)

यदि अ, आ के बाद ए, ऐ आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' तथा ओ, औ आए तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

नियम–(क) अ, आ के बाद ए, ऐ, हो तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' वृद्धि हो जाती है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	कृष्ण + एकत्वम्	=	कृष्णैकत्वम्	(अ + ए = ऐ)
2.	तस्य + एव	=	तस्यैव	(अ + ए = ऐ)
3.	सदा + एव	=	सदैव	(आ + ए = ऐ)

नियम–(ख) अ, आ के बाद ओ, औ के होने पर दोनों वर्णों के स्थान पर 'औ' वृद्धि होती है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	जल + ओघः	=	जलौघः	(अ + ओ = औ)
2.	महा + औषधिः	=	महौषधिः	(आ + औ = औ)
3.	वन + औषधि	=	वनौषधिः	(अ + औ = औ)

4. यण् संधि–(इको यणचि)

यदि इक् (इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ) के बाद कोई असमान स्वर हो, तो उसका 'यण्' अर्थात् क्रमशः इ/ई का 'य्', उ/ऊ का 'व्', ऋ/ ॠ का 'र्' और 'ऌ' का 'ल्' हो जाता है।

1. (य्) 'इ' या 'ई' के बाद असमान स्वर होने पर इ/ई का 'य्' हो जाता है, जैसे– यदि + अपि = यद्यपि, नदी + अत्र = नद्यत्र।
2. (व्) 'उ' या 'ऊ' के बाद असमान स्वर आने पर उ/ऊ का 'व्' हो जाता है, जैसे– मधु + अरिः = मध्वरिः, अनु + अयः = अन्वयः।
3. (र्) 'ऋ' या 'ॠ' के बाद असमान स्वर आने पर 'ऋ/ ॠ' का 'र' हो जाता है, जैसे–धातृ + अंश = धात्रंशः, भ्रातृ + अंशः = भ्रात्रंशः।
4. 'ऌ' के बाद असमान स्वर आने पर 'ऌ' का 'ल्' हो जाता है, जैसे–ऌ + अकारः = लकारः, ऌ + आकृतिः = लाकृतिः।

उदाहरणानि–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	इति + आदि	=	इत्यादि	
2.	यदि + अपि	=	यद्यपि	
3.	प्रति + एक	=	प्रत्येक	
4.	अति + आवश्यक	=	अत्यावश्यक	इ, ई, को य्
1.	सु + आगतम्	=	स्वागतम्	
2.	वधू + आगमनम्	=	वध्वागमनम्	उ, ऊ को व्
1.	मातृ + आदेशः	=	मात्रादेशः	
2.	पितृ + आदेशः	=	पित्रादेशः	ऋ, ॠ को र्
1.	ऌ + अकारः	=	लकारः	
2.	ऌ + आकृतिः	=	लाकृतिः	ऌ को ल्

5. अयादि सन्धिः—(एचोऽयवायावः)

यदि ए, ओ, ऐ, औ के बाद कोई भी (समान या असमान) स्वर आये तो क्रमशः 'ए' का 'अय्' 'ओ' का 'अव्', 'ऐ' का 'आय्', 'औ' का 'आव्' हो जाता है, **जैसे—**

अयादि सन्धि बोधक चक्रम्

पूर्ववर्णः	**परवर्णः**	**परिवर्तनम्**	
ए +	स्वरः	ए स्थाने अय्	ए ⟶ अय् + स्वरः
ऐ +	स्वरः	ऐ स्थाने आय्	ऐ ⟶ आय् + स्वरः
ओ +	स्वरः	ओ स्थाने अव्	ओ ⟶ अव् + स्वरः
औ +	स्वरः	औ स्थाने आव्	औ ⟶ आव् + स्वरः

उदाहरणानि—

1. ए + स्वरः = अय् + स्वरः

यथा—ने + अनम् = न् + ए + अनम्
= न् + अय् + अनम् = नयनम्

एवमेव—शे + अनम् = श् + ए + अनम्
= श् + अय् + अनम् = शयनम्

2. ऐ + स्वरः = आय् + स्वरः

यथा—नै + अकः = न् + ऐ + अकः
= न् + आय् + अकः = नायकः

एवमेव— गै + अकः = ग् + ऐ + अकः
= ग् + आय् + अकः = गायकः

3. ओ + स्वरः = अव् + स्वरः

यथा—भो + अनम् = भ् + ओ + अनम्
= भ् + अव् + अनम् = भवनम्

4. औ + स्वरः = आव् + स्वरः

यथा—पौ + अकः = प् + औ + अकः
= प् + आव् + अकः = पावकः

6. पूर्वरूपम् (एङः पदान्तादति)

जब पदान्त में ए, ओ हों तथा उनके पश्चात् अ आए तो पूर्व (पहले वाले) स्वर का ही उच्चारण होता है, बाद वाले अ का रूप अवग्रह (ऽ) चिह्न (अ का उच्चारण रोकने वाला चिह्न) शेष रह जाता है, उसे पूर्वरूप स्वर सन्धि कहते हैं; जैसे-

(अ) जब ए के बाद अ आए तो अ का पूर्वरूप (ऽ) हो जाता है। जैसे-

एते	+	अपि	=	एतेऽपि
हरे	+	अव	=	हरेऽव
हरे	+	अत्र	=	हरेऽत्र
ग्रामे	+	अपि	=	ग्रामेऽपि
रमे	+	अत्र	=	रमेऽत्र
के	+	अपि	=	केऽपि
गते	+	अद्य	=	गतेऽद्य
वने	+	अस्मिन्	=	वनेऽस्मिन्

(ब) जब ओ के बाद अ आए तब भी पूर्व (पहले) वाले ओ का ही रूप बचता है तथा अ का अवग्रह (ऽ) हो जाता है; जैसे

विष्णो	+	अत्र	=	विष्णोऽत्र
रामो	+	अवदत्	=	रामोऽवदत्
शिवो	+	अर्च्यः	=	शिवोऽर्च्यः
को	+	अपि	=	कोऽपि
कीटो	+	अपि	=	कीटोऽपि
कृतज्ञो	+	अस्मि	=	कृतज्ञोऽस्मि
प्रथमो	+	अध्यायः	=	प्रथमोऽध्यायः
बालो	+	अपि	=	बालोऽपि

(2) व्यञ्जन सन्धि

किसी व्यञ्जन का व्यञ्जन के साथ मेल होने पर जो परिवर्तन होता है। वह व्यञ्जन सन्धि होती है; जैसे—सत् + जनः = सज्जनः। इस उदाहरण में त् + ज का मेल होने पर प्रथम अक्षर 'त्' के स्थान पर 'ज्' हो गया।

व्यञ्जन संधि के भेद के अन्तर्गत पाठ्यक्रम में निम्नलिखित सन्धियों का अध्ययन अपेक्षित है—

1. परसवर्णः सन्धि (अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः)

नियम—(1) अनुस्वार के बाद यदि (श् ष् स् ह्) को छोड़कर कोई भी व्यञ्जन हों तो अनुस्वार को परसवर्ण (उत्तरपद का पञ्चम वर्ण) हो जाता है। किसी भी अपदान्त 'न्' 'त्' के स्थान पर होने वाले अनुस्वार के बाद दिए गए वर्ग का कोई वर्ण हो तो अनुस्वार को उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है।

(क) अपदान्त अनुस्वार के बाद 'क' वर्ग होने पर अनुस्वार के स्थान पर 'ङ्' होता है।

उदाहरण—

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
1.	कम् + कणः	=	कङ्कणः
2.	अम् + कितः	=	अङ्कितः
3.	मृदम् + गः	=	मृदङ्गः

(ख) अपदान्त अनुस्वार के बाद 'च' वर्ग होने पर अनुस्वार के स्थान पर 'ञ्' होता है।

उदाहरण—

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
1.	अम् + चितः	=	अञ्चितः
2.	चम् + चलः	=	चञ्चलः

(ग) अपदान्त अनुस्वार के बाद 'ट' वर्ग होने पर अनुस्वार के स्थान पर 'ण्' होता है।

उदाहरण—

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
1.	कम् + टकः	=	कण्टकः
2.	दम् + डः	=	दण्डः

(घ) अपदान्त अनुस्वार के बाद 'त' वर्ग होने पर अनुस्वार के स्थान पर 'न्' होता है।

उदाहरण—

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
1.	शाम् + तः	=	शान्तः
2.	कम् + दुकः	=	कन्दुकः

(ङ) अपदान्त अनुस्वार के बाद 'प' वर्ग होने पर अनुस्वार के स्थान पर 'म्' होता है।

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
1.	गुम् + फितः	=	गुम्फितः
2.	जम् + बु	=	जम्बुः

2. छत्व सन्धि (शश्छोऽटि)

नियम—पदान्त वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ वर्ण के बाद श् हो तो उसका पदान्त 'छ्' हो जाता है यदि उस श् के बाद स्वर ह, य्, व्, र् हो तो 'श्' का 'छ्' होने पर पूर्ववर्ती 'द्' का 'ज्' और 'ज्' का 'च्' यदि पूर्ववर्ती 'त्' हो तो यह 'च्' हो जाता है। यह नियम वैकल्पिक है—जैसे—तत् (तद्) + शिवः = तच्छिवः।

उदाहरण—

			('छ' होने पर)	('छ' न होने पर)
1.	तत् + शिला	=	तच्छिला	तच्शिला
2.	सत् + शीलः	=	सच्छीलः	सच्शीलः
3.	एतत् + श्रुत्वाः	=	एतच्छ्रुत्वा	एतच्श्रुत्वा
4.	मत् + शिरः	=	मच्छिरः।	मच्शिरः।

3. तुगागम सन्धि (च् का आगम)

नियम (1)—ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' हो तो बीच में (तुक् आगम) 'त्' लग जाता है तथा उस 'त्' का 'च्' हो जाता है।

उदाहरण—

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
1.	राम + छाया	=	रामच्छाया
2.	स्व + छन्दः	=	स्वच्छन्दः

नियम (2)—दीर्घ स्वर के बाद 'छ' हो तो बीच में (तुक् आगम) 'त्' लगेगा तथा उस 'त्' का 'च्' हो जाएगा।

जैसे—चे + छिद्यते = चेच्छिद्यते

नियम (3)—यदि पद के अन्त में दीर्घ स्वर हो और बाद में 'छ' आए तो विकल्प से (तुक् आगम) 'त्' होगा 'त्' होने पर यह 'च्' हो जाएगा।

उदाहरण—

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
1.	लक्ष्मी + छाया	=	लक्ष्मीच्छाया
2.	लता + छाया	=	लताच्छाया

नियम (4)—'आ' या 'मा' के बाद 'छ' रहने पर तुक् का आगम होता है तुक् का 'त्' शेष रहने पर 'च्' होगा।

उदाहरण—

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
1.	आ + छादयति	=	आच्छादयति
2.	मा + छिदत	=	माच्छिदत

4. अनुस्वार सन्धिः (मोऽनुस्वारः)

['म्' का 'अनुस्वार' (ं)] —यदि पहले पद के अन्त में 'म्' आए और उसके बाद कोई भी व्यंजन आए तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है: जैसे—ग्रामम् + याति = ग्रामं याति, पाठम् + पठति = पाठं पठति।

5. जशत्व सन्धि (झलां जलोऽन्ते)

प्रथम पद (शब्द) के अन्त में किसी भी वर्ग के प्रथम वर्ण, (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद द्वितीय पद (शब्द) का पहला वर्ण कोई स्वर अथवा वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो अथवा य्, र्, ल्, व्, आए तो प्रथम पद के अन्तिम वर्ण के स्थान पर अपने वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है: जैसे—वागीशः = वाक् + ईशः, अब्जः = अप् + जः, षड्दर्शनम् = षट् + दर्शनम्।

6. प्रथमवर्णस्य पञ्चमवर्णे परिवर्तनम्

यदि वर्ग के पहले वर्ण के बाद किसी भी वर्ग का पंचम वर्ण हो तो प्रथम वर्ण का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है: जैसे—षण्णवतिः = षट् + नवतिः, सत् + नाम = सन्नाम, अप + मयम् = अम्मयम्।

(3) विसर्ग सन्धि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन के होने पर विसर्ग में होने वाले परिवर्तन को विसर्ग सन्धि कहा जाता है। जैसे रामः + च = रामश्च।

विसर्ग सन्धि के भेद—उत्व सन्धि, रत्व सन्धि, सत्व सन्धि, विसर्ग लोप।

1. उत्व सन्धि

नियम (1)—यदि विसर्ग से पूर्व 'अ' हो तथा बाद में भी 'अ' हो तो विसर्ग सहित पूर्व 'अ' का 'ओ' हो जाता है तथा बाद के 'अ' के स्थान पर अवग्रह 'ऽ' हो जाता है।

उदाहरण—

सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
पुरुषः + अस्ति	=	पुरुषोऽस्ति
कः + अयम्	=	कोऽयम्
प्रथमः + अध्यायः	=	प्रथमोऽध्यायः
एषः + अपि	=	एषोऽपि

नियम (2)—विसर्ग से पूर्व यदि 'अ' हो और बाद में किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा तथा पाँचवाँ वर्ण हो अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई वर्ण हो तो विसर्ग 'अ' का 'ओ' हो जाता है।

उदाहरण—

सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**सन्धि विच्छेदः**		**सन्धिः**
देवः + गच्छति	=	देवो गच्छति	मनः + हरः	=	मनोहरः
रामः + जयति	=	रामो जयति	यशः + गानम्	=	यशोगानम्
बालकः + लिखति	=	बालको लिखति।			

2. रत्व सन्धि

यदि विसर्ग से पहले अ या आ को छोड़कर और कोई स्वर हो तथा बाद में कोई स्वर का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई वर्ण हो तो उस विसर्ग का 'र्' हो जाता है।

उदाहरण—

सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
प्रातः + गच्छति	=	प्रातर्गच्छति
अहः + निशम्	=	अहर्निशम्
पुनः + आस्ते	=	पुनरास्ते
हरिः + अवदत्	=	हरिरवदत्

3. विसर्गस्य लोपः

विसर्ग का लोप निम्नलिखित नियम से होता है—

(क) सः और एषः के पश्चात् 'अ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर या व्यञ्जन हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे—सः + एति = स एति। एषः + याति = एष याति।

(ख)विसर्ग के पहले 'अ' हो और उसके बाद 'अ' से भिन्न कोई अन्य स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे—रामः + आगच्छति = राम आगच्छति। अतः + एव = अतएव।

(ग) विसर्ग के पहले 'आ' हो और उसके बाद कोई भी स्वर हो या वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो या य्, र्, ल्, व्, ह्, में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है— जैसे—देवाः + इह = देवाइह। वाताः +वान्ति = वातावान्ति।

4. सत्व सन्धि

यदि विसर्ग के बाद च्, छ्, हो तो विसर्ग का 'श्', ट्, ठ् हो तो विसर्ग का 'ष्' तथा क्, त्, स्, थ् हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है।

जैसे– कः + चित् = कश्चित्। रामः + टीकते = रामष्टीकते। नमः + कारः = नमस्कारः। भक्तः + सेवते = भक्तस्सेवते।

पाठ्यक्रम में निम्नलिखित सन्धियाँ हैं–

(i) **व्यञ्जन सन्धिः**–वर्गीयप्रथमक्षराणां तृतीय वर्णे परिवर्तनम्, प्रथमवर्णस्य पञ्चमवर्णे परिवर्तनम्।

(ii) **विसर्गः सन्धिः**–विसर्गस्य उत्वं, विसर्गस्य स्थाने स्, श्, ष्।

❑❑

अध्याय – 2 समासः (वाक्येषु समस्तपदानां विग्रहः विग्रहपदानां च समासः)

स्मरणीय बिन्दु

(1) समास मुख्य रूप से दो पदों के मध्य होता है। इसमें दो ही पद होते पूर्वपद और उत्तरपद। पूर्वपद में विभक्ति लगाकर उत्तरपद लिखना विग्रह कहा जाता है।

(2) यह संज्ञा, सर्वनाम आदि पदों के मध्य होता है। अनेक शब्दों का समास अर्थानुसार किया जाता है।

समास शब्द की व्युत्पत्ति–'सम्' पूर्वक 'अस्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगने पर समास शब्द बना।

समास का अर्थ है–समसनं समासः अर्थात् 'संक्षेप करना' या 'घटाना'।

दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि दो या दो से अधिक पदों को एक पद बनाने की प्रक्रिया, नियम या विधि को (संक्षेप करने की विधि को) समास कहते हैं। समास को समस्त पद भी कहते हैं।

यथा–नृणाम् पतिः – नृपतिः

यहाँ 'नृपतिः' का भी वही अर्थ है जो 'नृणाम् पतिः' का है, परन्तु दोनों पदों को मिला देने से 'नृणाम्' के विभक्ति सूचक-प्रत्यय 'आणाम्' का लोप हो गया और 'नृपतिः' शब्द 'नृणाम् पतिः' से छोटा हो गया। अतः 'नृपतिः' समस्त पद है।

समस्त पद को तोड़कर विभक्ति के साथ अलग-अलग करना विग्रह कहलाता है; जैसे–'नृणाम् पतिः'।

समास के भेद

समास के निम्नलिखित भेद होते हैं–

1. तत्पुरुष समास–(i) विभक्ति (ii) उपपद (iii) नञ्
2. कर्मधारय समास
3. द्विगु समास
4. द्वन्द्व समास
5. बहुव्रीहि समास
6. अव्ययीभाव समास

1. **तत्पुरुष समास–(i) विभक्ति तत्पुरुष समास** में विग्रह करते समय द्वितीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है, समस्त पद बनाते समय जिस विभक्ति का लोप होता है, यह समास उसी नाम से जाना जाता है।

(क) कर्म तत्पुरुष समास (द्वितीया तत्पुरुष समास)–इस समास में पूर्व पद में द्वितीया विभक्ति होती है तथा उत्तर पद में श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त, आपन्न, आदि शब्दों के योग में कर्म तत्पुरुष या द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण–

रामश्रितः	=	रामं श्रितः	अरण्यातीतः	=	अरण्यम् अतीतः
शोकपतितः	=	शोकं पतितः	दुःखापन्नः	=	दुःखम् आपन्नः
गृहगतः	=	गृहं गतः	मेघात्यस्तः	=	मेघान्अत्यस्त
सुखप्राप्तः	=	सुखं प्राप्तः			

(ख) करण तत्पुरुष समास (तृतीया तत्पुरुष समास)—जब विग्रह में प्रथम पद तृतीया विभक्ति (से. द्वारा) में हो तब वह तृतीया तत्पुरुष समास कहलाता है।

उदाहरण—

हरित्रातः	=	हरिणा त्रातः	सुखहीनः	=	सुखेन हीनः
खड्गहतः	=	खड्गेन हतः	नखभिन्नाः	=	नखैः भिन्नाः
बाणहतः	=	बाणेन हतः			

(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष समास (चतुर्थी तत्पुरुष समास)—जब विग्रह में पूर्व पद चतुर्थी विभक्ति (के लिए) में हो तब चतुर्थी तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण—

यूपदारु	=	यूपाय दारु
भूतबलिः	=	भूतेभ्यः बलिः
गोहितम्	=	गवे हितम्

(घ) अपादान तत्पुरुष समास (पञ्चमी तत्पुरुष समास)—जब समास का प्रथम शब्द पञ्चमी विभक्ति में हो, तब वह पञ्चमी तत्पुरुष समास कहलाता है।

उदाहरण—

चौरभयम्	=	चौरात् भयम्
सिंहभयम्	=	सिंहात् भयम्
व्याघ्रभीतिः	=	व्याघ्रात् भीतिः

(ङ) सम्बन्ध तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष)—षष्ठी तत्पुरुष समास में प्रथम शब्द षष्ठी विभक्ति में होता है।

उदाहरण—

1. राजसेवकः	=	राज्ञः सेवकः
2. ईश्वरभक्तः	=	ईश्वरस्य भक्तः
3. सुरेशः	=	सुराणाम् ईशः
4. नरपतिः	=	नराणाम् पतिः

(च) अधिकरण तत्पुरुष समास (सप्तमी तत्पुरुष समास)—जिसका प्रथम शब्द सप्तमी विभक्ति में होता है वह सप्तमी तत्पुरुष होता है।

उदाहरण—

अक्षशौण्डः	=	अक्षेषु शौण्डः
प्रेमधूर्तः	=	प्रेम्णि धूर्तः
मध्यान्तरः	=	मध्ये अन्तरः
नीतिनिपुणः	=	नीतौ निपुणः

(ii) नञ् तत्पुरुष समास—निषेध (Negative) अर्थ को बताने के लिए नञ् तत्पुरुष का प्रयोग होता है। यदि तत्पुरुष में प्रथम पद 'न' रहे और दूसरा पद संज्ञा या विशेषण हो तो वह नञ् तत्पुरुष समास कहलाता है। यह 'न' व्यञ्जन से पूर्व 'अ' में तथा स्वर के पूर्व 'अन्' में बदल जाता है—

उदाहरण—

अक्षत्रम्	=	न क्षत्रम्
अब्राह्मणः	=	न ब्राह्मणः
अन्यायः	=	न न्यायः

(iii) उपपद तत्पुरुष समास—यदि तत्पुरुष का पूर्व पद ऐसी संज्ञा या अव्यय हो जिसके अभाव में दूसरे पद (उत्तर पद) का वह रूप नहीं रह सकता जो उसका है तो वह उपपद तत्पुरुष समास कहलाता है। इसमें उत्तर पद में कोई क्रिया अवश्य होती है।

उदाहरण—

स्वर्णकार:	=	स्वर्णं करोति इति
मालाकार:	=	मालां करोति इति
चित्रकार:	=	चित्रं करोति इति

2. **कर्मधारय समास**—जहाँ दोनों पदों में विशेषण—विशेष्य या उपमेय—उपमान का संबंध होता है वहाँ कर्मधारय समास होता है। यह तत्पुरुष समास का ही एक भेद है।

(1) प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य—

यथा—नीलोत्पलम् = नीलम् च तद् उत्पलम्।

(2) प्रथम पद उपमान तथा दूसरा पद उपमेय—

यथा—घनश्याम: = घन: इव श्याम:।

(3) प्रथम पद उपमेय तथा दूसरा पद उपमान—

यथा—मुखकमलम् = मुखं कमलमिव।

3. **द्विगु समास**—कर्मधारय समास में यदि प्रथम पद संख्यावाची हो और दूसरा पद संज्ञा हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं। अधिकतर यह समाहार अर्थ में होता है। द्विगु प्राय: नपुंसकलिंग होता है।

यथा—त्रिलोकम्	=	त्रयाणां लोकानां समाहार:।
त्रिभुवनम्	=	त्रयाणां भुवनानां समाहार:।
द्विगु:	=	द्वयो: गवो: समाहार:।
नवग्रहम्	=	नवानां ग्रहाणां समाहार:।
पञ्चवटी	=	पञ्चानां वटानां समाहार:।

4. **द्वन्द्व समास**—'चार्थे द्वन्द्व:' इस सूत्र से यह स्पष्ट होता है कि द्वन्द्व समास 'च' के अर्थ में होता है, जैसे—राम: च कृष्ण: च।

जिस समास में सभी पद अर्थात् पूर्व पद और उत्तरपद प्रधान हों, वह द्वन्द्व समास होता है। द्वन्द्व समास साधारणतया तीन प्रकार का होता है— **(i)** इतरेतर द्वन्द्व **(ii)** समाहार द्वन्द्व **(iii)** एकशेष द्वन्द्व

(i) इतरेतर द्वन्द्व—इसमें दो या दो से अधिक पदों का प्रयोग होता है। पदों की संख्या के अनुसार द्विवचन या बहुवचन का प्रयोग अन्त में होता है। लिंग का प्रयोग अन्तिम शब्द के अनुसार होता है। जैसे—माता च पिता च = मातापितरौ। कन्दं च मूलं च फलानि च = कन्दमूलफलानि।

(ii) समाहार द्वन्द्व—शब्द समूहवाची हो (जाति वाचक) समास बनने पर शब्द के अन्त में नपुंसकलिंग, एकवचन होता है—जैसे—गोधूमचणकम् = गोधूमा: च चणका: च तेषां समाहार:।

(iii) एकशेष द्वन्द्व—इस समास में जोड़े का समास होता है और दोनों पदों के स्थान पर किसी एक पद को लेकर द्विवचन अथवा बहुवचन लिखा जाता है जैसे—माता च पिता च = पितरौ

5. **बहुव्रीहि समास**—'अनेकमन्यपदार्थे' इस सूत्र के अनुसार जिस समास में समस्त पदों से भिन्न कोई अन्य पदार्थ प्रधान हो उसे 'बहुव्रीहि' समास कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि जहाँ अर्थ करने पर जिसको, जिसने, जिसका, जिसमें, आदि अर्थ निकलें जैसे—चतुर्मुख: = चत्वारि मुखानि यस्य स:।

बहुव्रीहि समास को दो भागों मे विभाजित किया जाता है— **(i)** समानाधिकरण, **(ii)** व्यधिकरण।

समानाधिकरण बहुव्रीहि समास—इसमें पूर्व पद व उत्तर पद दोनों में समान विभक्ति होती है। जैसे—लम्बोदर: = लम्बम् उदरं यस्य स:।

व्याधिकरण बहुव्रीहि समास—इसमें पूर्वपद और उत्तरपद दोनों असमान विभक्ति होती है। जैसे—गलबद्धशुगालक: = गले बद्ध: शुगाल: यस्य स:।

6. **अव्ययीभावः समास—** 'पूर्व पद प्रधानोऽव्ययी भावः' इस सूत्र के अनुसार जिस समास में पहला पद प्रधान होता है तथा सम्पूर्ण पद अव्यय हो जाता है, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे—यथाशक्ति = शक्तिम् अनतिक्रम्य।

अन्य उदाहरण—

1. अनु (पश्चात् तथा योग्यम्)—अनुरथम् = रथानां पश्चात् इति। अनुरूपम् = रूपस्य योग्यम् इति।
2. उप (समीपम्)— उपगंगम् = गंगायाः समीपम् इति।
3. सह (सहितं)—सचित्रम् = चित्रेण सहितम्।
4. निर् (अभावः)—निर्जनम् = जनानाम् अभावः।
5. प्रति (वीप्सा)—प्रतिदिनम् = दिनम् दिनम् प्रति।
6. यथा (अनति क्रम्य)— यथाविधि = विधिम् अनतिक्रम्य।

पाठ्यक्रमान्तर्गत—'तत्पुरुष (विभक्ति), अव्ययी भावः (अनु, उप, सह, निर्, प्रति, यथा) एवं द्वन्द्वः (केवलम् इतरेतर-द्वंद्व समासः)' समास ही लिए गए हैं।

❑❑

अध्याय — 3 प्रत्ययाः

स्मरणीय बिन्दु

प्रत्यय—वे शब्द या शब्दांश, जिनका अपना कोई स्वतन्त्र अर्थ नहीं होता, परन्तु किसी शब्द या धातु के पीछे जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते है; जैसे—

कृ + क्त्वा = कृत्वा, कुमार + ङीप् = कुमारी

(1) धातु अथवा शब्द के अन्त में प्रत्यय लगा देने से उनके अर्थ में परिवर्तन आ जाता है।

(2) प्रत्ययों का प्रयोग तीनों लिङ्गों (पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) एवं तीनों कालों (भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्यकाल) में किया जाता है।

प्रत्यय के प्रकार—(I) कृदन्त (II) तद्धिता (III) स्त्री प्रत्ययाः

नोट—पाठ्यक्रम में केवल तद्धिताः (मतुप, त्व) व स्त्री प्रत्यय (टाप्) ही हैं।

I. कृदन्ताः

कृदन्ताः अर्थात् कृत् प्रत्यय धातुओं के साथ जुड़कर संज्ञा, विशेषण आदि शब्दों का निर्माण करते हैं; जैसे—

कृ + तव्यत् = कर्तव्य, भू + क्त्वा = भूत्वा

तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय विधिलिङ्ग (चाहिए) अर्थ को प्रकट करते हैं। विधिलिङ्ग लकार के अर्थ में विधि कृदन्त अर्थात् तव्यत् और अनीयर् आदि प्रत्ययों का प्रयोग होता है। इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग कर्म वाच्य और भाव वाच्य वाक्यों में होता है। तव्यत् का 'तव्य' और अनीयर् का 'अनीय' शेष रहता है।

(1) जब ये कर्मवाच्य में होंगे तो कर्म के अनुसार इनके लिंग, वचन और कारक होंगे। कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—त्वया पुस्तकानि पठितव्यानि / त्वया पुस्तकानि पठनीयानि । इन वाक्यों में कर्ता 'त्वम्' में तृतीया विभक्ति कर्म 'पुस्तक' को प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार नपुंसकलिङ्ग बहुवचन में 'पठितव्यानि' तथा 'पठनीयानि' का प्रयोग होता है।

(2) जब तव्यत् और अनीयर् भाव वाच्य में होंगे तो कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा तव्यत् अनीयर् प्रत्ययों में नपुंसकलिङ्ग एकवचन ही रहता है; जैसे—

तेन हसितव्यम् / तेन हसनीयम्।

(3) तव्यत्, अनीयर् प्रत्ययान्त पद विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं।

(क) तव्यत् प्रत्ययः

शब्द बनाने के नियम—

1. तव्यत् प्रत्यय का प्रयोग 'चाहिए' अथवा 'योग्य' के अर्थ में होता है— जैसे— जि + तव्यत् = जेतव्यः (जीतने योग्य), लिख् = लेखितव्यः (लिखने योग्य)।

   तव्यत् प्रत्यय के रूप तीनों लिङ्गों तथा सभी विभक्तियों में बनते हैं। जैसे—प्रथमा— पुल्लिंग—जेतव्यः (रामवत्), स्त्रीलिंग—जेतव्या (लतावत्), नपुंसकलिंग—जेतव्यम्(फलवत्)।
2. धातु से तव्यत् प्रत्यय जुड़ने पर उसके प्रथम स्वर इ, उ, ऋ, लृ का गुण (क्रमशः ए, ओ, अर्, अल्) हो जाता है, जैसे— चि + तव्यत् = चेतव्यः, जि + तव्यत् = जेतव्यः, क्रुध् + तव्यत् = क्रोधव्यः।
3. सेट्(इ से युक्त होने वाली) धातु+ तव्यत् प्रत्यय के मध्य इट् (इ) लग जाता है, जैसे—पठ् + तव्यत् = पठितव्यः, क्रीड् + तव्यत् = क्रीडितव्यः।
4. तव्यत् प्रत्यय के कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे— मया रोटिका खादितव्या, मया फलं खादितव्यं, मया ग्रन्थः पठितव्यः।
5. अकर्मक धातु में तव्यत् युक्त क्रिया प्रथमान्त नपुंसकलिंग तथा एकवचन की होती है— सर्वैः किमर्थम् खादितव्यम्।

तव्यत् प्रत्ययान्त-शब्दानां वाक्यप्रयोगाः

1. छात्रैः पुस्तकालये तूष्णीम् स्थातव्यम्।
2. जनैः समाचारपत्राणि पठितव्यानि।
3. बालैः गुरुः गन्तव्यः।
4. बालिकाया गीतं गातव्यम्।
5. त्वया भोजनं खादितव्यम्।

(ख) अनीयर् प्रत्ययः

संस्कृत में अनीयर् प्रत्यय का प्रयोग तव्यत् प्रत्यय की भाँति 'चाहिए' अथवा 'योग्य' अर्थ में किया जाता है जैसे— कृ+ अनीयर्= करणीयः, पठ् + अनीयर् = पठनीयः, दा + अनीयर् =दानीयः। अनीयर् प्रत्यय कर्म वाच्य तथा भाव वाच्य में होता है। इसमें र् का लोप हो जाता है तथा अनीय शेष रहता है। अनीयर् युक्त वाक्य में कर्ता तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। धातु उपसर्ग में र्/ष्/ऋ के रहने पर णत्व का नियम भी लागू हो जाता है, जैसे—आप् +अनीयर् =आपनीयम्, प्र + आप + अनीयर् = प्रापणीयम्।

इसका प्रयोग कर्मवाच्य में होता है तथा कहीं विशेषणवत् भी होता है। जैसे—अस्माभिः लेखः लेखनीयः = हमारे द्वारा लेख लिखा जाना चाहिए। भाववाच्य में — सर्वैः हसनीयम् = सबको हँसना चाहिए।

अनीयर् प्रत्ययान्त-शब्दानां वाक्यप्रयोगाः

1. पिता, पुत्राः पुत्रयाः च पठनीयाः।
2. पितरः सदैव वन्दनीयाः।
3. पुस्तकेषु किमपि न लेखनीयम्।
4. अस्माभिः सेवकाः पोषणीयाः।
5. ते जनाः वन्दनीयाः भवन्ति।

(ग) शतृ प्रत्ययः

'करता / होता हुआ' अर्थ प्रकट करने हेतु परस्मैपदी धातुओं में वर्तमान काल बोधक शतृ प्रत्यय लगता है। शतृ प्रत्यय में से श् तथा ऋ का लोप हो जाता है। मात्र अत् शेष रह जाता है। शतृ प्रत्ययान्त शब्द क्रिया विशषेण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

धातुओं के साथ गुणों के विकरण अ, य, अय आदि भी लगते हैं। भ्वादिगण एवं तुदादिगण का विकरण शप् तथा श का अ पररूप होकर (दीर्घ सन्धि के बिना) शतृ के अ में मिल जाता है।

शत् प्रत्यय लगने पर परिवर्तनशील धातुओं में परिवर्तन भी कर दिया जाता है, जैसे — गम् + अत् (गम् का गच्छ) गच्छ् + अत = गच्छत् = जाता हुआ, पठ् + अत् = पठत्, हस् + अत् = हसत्।

शतृ प्रत्ययान्त-शब्दानां वाक्यप्रयोगाः

(i) पुष्पवाटिकां गच्छन्त्यः युवतयः हसन्ति।

(ii) जीवितं वाञ्छन् नरः कलहयुक्तं गृहं त्यजेत्।

(iii) तस्य मेषस्य क्षितौ प्र + लुठ् +शतृ (प्रलुठन) वह्निज्वालाः।

(iv) ग्रामं गम् + शत् (गच्छन) मनुष्यः वृक्षच्छायाम् अधिशेते।

(v) गुरूणां मार्गम् अनु + सृ + शतृ मनुष्यः शोभते।

(घ) शानच् प्रत्ययः

शानच् का प्रयोग शतृ के ही अर्थ में होता है। शतृ प्रत्यय परस्मैपदी और उभयपदी धातुओं के साथ होता है जबकि वर्तमान कालबोधक शानच् का प्रयोग उभयपदी और आत्मनेपदी धातुओं के साथ होता है। शानच् प्रत्यय में से श् और च् का लोप हो जाता है, श् के स्थान पर प्रायः म् लग जाता है। शानच् प्रत्ययान्त पदप्रयोग विशेषण रूप में अलग–अलग वचनों में होता है। भ्वादिगणीय धातुओं के साथ विकरण अ भी लग जाता है। इस प्रत्यय से जुड़े शब्द रूप पुल्लिंग में रामवत्, स्त्रीलिङ्ग में रमावत् तथा नपुंसकलिङ्ग में फलवत् चलते हैं। शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के लिंग वचन तथा कारक विशेष्य के अनुसार रहते हैं।

शानच् प्रत्ययान्त–शब्दानां वाक्यप्रयोगाः

(i) देशं सेवमानाः सैनिकाः सर्वोच्चं बलिदानं कुर्वन्ति।

(ii) शिवं वन्दमाना शानच् पार्वती कठोरतपः अकरोत्।

(iii) पुरस्कारं लभ् + शानच् (लभमानः) बालकः प्रसन्नोऽस्ति।

(iv) धारां वि + भ्रम् + शानच् (विभ्रमाणः) शेषनागः कष्टं नानुभवति।

II. तद्धिताः

तद्धित शब्द का अर्थ है–'तेभ्यः प्रयोगेभ्यः हिताः इति तद्धिताः' अर्थात् ऐसे प्रत्यय जो विभिन्न प्रयोगों के काम में आ सकें तथा जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषणादि के साथ जुड़कर उनके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे– वसुदेव + अण् = वासुदेवः (वसुदेवस्य अपत्यः पुमान् इति) यहाँ पर वसुदेव में अण् प्रत्यय होने पर वासुदेव बना। तद्धित प्रत्यय अनेक हैं, परन्तु पाठ्यक्रम में मतुप्, ठक्, त्व तथा तल् प्रत्यय हैं।

(क) मतुप् (मत्, वत्) प्रत्यय

किसी संज्ञा शब्द से यह प्रत्यय जोड़ा जाता है। यह प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषणादि के साथ जोड़ा जाता है। यथा–गुण + मतुप् = गुणवान्। अर्थात् वह इसका है (तदस्यास्ति) अथवा वह इसमें है (तदस्मिन्नस्ति) इन अर्थों को प्रकट करता है।

'मतुप्' प्रत्यय से युक्त शब्द विशेषण होता है–यथा–शक्तिमान् जनः।

मतुप् प्रत्यत्य से युक्त शब्दों के रूप पुल्लिंग में भवत् की तरह, स्त्रीलिंग में नदी की तरह तथा नहपुंसक लिङ्क में जगत् की तरह चलते हैं; जैसे–

क्र.सं.	शब्द	प्रत्यय	निर्मित	शब्द	पु. स्त्री	नपुं:
1.	श्री	मतुप्	श्रीमत्	श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत
2.	बुद्धि	मतुप्	बुद्धिमत्	बुद्धिमान्	बुद्धिमती	बुद्धिमत्
3.	रूप	मतुप्	रूपवत्	रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
4.	ज्ञान	मतुप्	ज्ञानवत्	ज्ञानवान्	ज्ञानवती	ज्ञानवत्
5.	धन	मतृप्	धनवत्	धनवान्	धनवती	धनवत्

'मत्' के स्थान पर 'वत्' का प्रयोग–यदि शब्द के अन्त में 'स्' अथवा अ/आ/वर्गीय प्रथमः, द्वितीयः, तृतीयः, चतुर्थः च वर्ग हो तो 'मत्' के स्थान पर 'वत्' होता है–यथा–

रूप + मतुप् = रूपवत्

यशस् + मतुप् = यशस्वत्

भास् + मतुप् = भास्वत्

उदाहरण–

(1) **अकारान्त** शब्दों में मतुप्– शील + मतुप् = शीलवत्

भग + मतुप् = भगवत्

(2) **आकारान्त** शब्दों में मतुप्– आशा + मतुप् = आशावत्

	शोभा	+	मतुप्	=	शोभावत्
(3) **इकारान्त** शब्दों में मतुप्–	शक्ति	+	मतुप्	=	शक्तिमत्
	भूमि	+	मतुप्	=	भूमिमत्
(4) **उकारान्त** शब्दों में मतुप्–	भानु	+	मतुप्	=	भानुमत्
	अंशु	+	मतुप्	=	अंशुमत्
(5) **ऊकारान्त** शब्दों में मतुप्–	वधू	+	मतुप्	=	वधूमत्
(6) **ऋकारान्त** शब्दों में मतुप्–	पितृ	+	मतुप्	=	पितृमत्
	मातृ	+	मतुप्	=	मातृमत्
(7) **ओकारान्त** शब्द में मतुप्–	गो	+	मतुप्	=	गोमत्
(8) **हलन्त** शब्दों में मतुप्–	आयुष्	+	मतुप्	=	आयुष्मत्
	धनुष्	+	मतुप्	=	धनुष्मत्

(ख) ठक् (इक्) प्रत्यय

अकारान्त संज्ञा शब्दों से पृथक्-पृथक् अर्थों को प्रकट करने के लिए 'ठक्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। 'ठक्' प्रत्यय के स्थान पर 'इक' हो जाता है। ठक् प्रत्यय पर रहते शब्द के प्रथम स्वर की वृद्धि हो जाती है। ठक् प्रत्यायान्त शब्द विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं। अत: इनके रूप भी विशेष्य के समान तीनों लिङ्गों और तीनों वचनों में चलते हैं।

यथा–	धर्म	+	ठक्	=	धार्मिक:
	इतिहास	+	ठक्	=	ऐतिहासिक:
	समाज	+	ठक्	=	सामाजिक:
	पक्षी	+	ठक्	=	पाक्षिक:
	नास्ति	+	ठक्	=	नास्तिक:

(ग) त्व प्रत्यय

तथा

तल् प्रत्यय

भाववाचक संज्ञा बनाने हेतु 'त्व एवं तल्' प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। 'तल्' का प्रयोग विशेषण शब्दों के साथ होता है शब्द के साथ 'त्व' पूरा जुड़ता है तथा 'तल् ' के स्थान पर 'ता ' जुड़ता है। 'त्व' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग एकवचन के रूप में प्रयुक्त होता है तथा 'तल्' से जुड़ने पर शब्द स्त्रीलिङ्ग रूप में प्रयुक्त होता है तथा उनके रूप लतावत् बनते हैं।

त्व तथा तल् (ता) प्रत्ययान्त शब्दों के उदाहरण–

शब्द	**त्व-प्रत्यय निर्मित शब्द**	**तल् (ता) प्रत्यय निर्मित शब्द**	**शब्द**	**त्व-प्रत्यय निर्मित शब्द**	**निर्मित शब्द**
क्रूर	क्रूरत्वम्	क्रूरता	सघन	सघनत्वम्	सघनता
महत्	महत्त्वम्	महत्ता	रमणीय	रमणीयत्वम्	रमणीयता
घन	घनत्वम्	घनता	उदार	–	उदारता
विद्वत्	विद्वत्त्वम्	विद्वता	दयालु	–	दयालुता
चपल	चपलत्वम्	चपलता	कृपण	कृपणत्वम्	कृपणता
मधुर	मधुरत्वम्	मधुरता	नृप	नृपत्वम्	नृपता
गहन	गहनत्वम्	गहनता	संक्षिप्त	–	संक्षिप्तता
पृथु	पृथुत्वम्	पृथुलता	देव	देवत्वम्	देवता

मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता	लघु	लघुत्वम्	लघुता
विशाल	विशालत्वम्	विशालता	दृढ़	दृढ़त्वम्	दृढ़ता
कवि	कवित्वम्	कविता	कृष्ण	कृष्णत्वम्	कृष्णता
दीन	दीनत्वम्	दीनता	दीर्घ	दीर्घत्वम्	दीर्घता
क्षत्रिय	क्षत्रियत्वम्	क्षत्रियता	पटु	पटुत्वम्	पटुता
वीर	वीरत्वम्	वीरता	हीन	हीनत्वम्	हीनता
शम	शमत्वम्	शमता	कृति	कृतित्वम्	–
सम	समत्वम्	समता	पूर्ण	पूर्णत्वम्	पूर्णता

III. स्त्री प्रत्ययौ

स्त्रीप्रत्ययः– स्त्रीलिङ्ग बनाने के काम आने वाले प्रत्यय स्त्री प्रत्यय (टाप् तथा ङीप्) कहलाते हैं। ये अनेक हैं, यहाँ केवल पाठ्यक्रमानुसार टाप् तथा ङीप् प्रत्यय ही दिए जा रहे हैं–

(क) टाप् प्रत्यय

सूत्र–'अजाद्यतष्टाप्'।4/1/4

(1) अजादि समूह में प्रयुक्त (अकारांत) पुल्लिंगों को स्त्रीलिङ्ग बनाने में टाप् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। टाप् प्रत्ययान्त शब्दों के 'ट्, प्' का लोप होकर 'आ' रूप ही शेष रहता है, जैसे–

अजादिगण शब्द–

शब्द	+	**टाप् प्रत्यय**	**निर्मितशब्दः**	**हिन्दी रूप**
अज	+	टाप् (आ)	अजा	बकरी
एडक	+	टाप् (आ)	एडका	भेड़
अश्व	+	टाप् (आ)	अश्वा	घोड़ी
चटक	+	टाप् (आ)	चटका	चिड़िया
मूषक	+	टाप् (आ)	मूषिका	चुहिया
बाल	+	टाप् (आ)	बाला	बालिका
वैश्य	+	टाप् (आ)	वैश्या	वैश्य जाति की स्त्री
वत्स	+	टाप् (आ)	वत्सा	बछिया
कोकिल	+	टाप् (आ)	कोकिला	मादा कोयल
क्षत्रिय	+	टाप् (आ)	क्षत्रिया	क्षत्रिय जाति की स्त्री

(टाप् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप लतावत् चलते हैं।)

(ख) ङीप् (ई)

'ङीप्' स्त्रीप्रत्यय है। प्रयोगदशा में इसका 'ई' ही शेष रहता है। स्त्रीलिङ्ग शब्द निर्माण के लिए 'ङीप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे–लौकिक + ङीप् = लौकिकी। 'ङीप्' प्रत्ययान्त शब्दों की रूप रचना 'नदी' शब्द के समान होती है।

ध्यातव्यम्–जब शतृप्रत्ययान्त शब्दों के द्वारा 'ङीप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है तब अन्तिम 'त्' वर्ण से पहले 'न्' इस वर्ण का आगम होता है। जैसे–गम् + शतृ = गच्छत् + 'ङीप्' = गच्छन्त् + ई = गच्छन्ती।

उदाहरणम्–

शब्दाः		+	**प्रत्यय**		**निर्मित स्त्रीलिंङ्गशब्दाः**
यथा–	देव	+	ङीप्	=	देवी
(1)	तरुण	+	ङीप्	=	तरुणी
(2)	कुमार	+	ङीप्	=	कुमारी
(3)	त्रिलोक	+	ङीप्	=	त्रिलोकिनी
(4)	किशोर	+	ङीप्	=	किशोरी

(5)	कर्तृ	+	ङीप्	=	कर्त्री
(6)	जनयितृ	+	ङीप्	=	जनयित्री
(7)	मनोहारिन्	+	ङीप्	=	मनोहारिणी
(8)	मालिन्	+	ङीप्	=	मालिनी
(9)	तपस्विन्	+	ङीप्	=	तपस्विनी
(10)	भवत्	+	ङीप्	=	भवती
(11)	श्रीमत्	+	ङीप्	=	श्रीमती
(12)	गच्छत् (गम् + शतृ)	+	ङीप्	=	गच्छन्ती
(13)	पचत् (पच् + शतृ)	+	ङीप्	=	पचन्ती
(14)	नृत्यत् (नृत् + शतृ)	+	ङीप्	=	नृत्यन्ती
(15)	पश्यत् (दृश् + शतृ)	+	ङीप्	=	पश्यन्ती
(16)	वदत् (वद् + शतृ)	+	ङीप्	=	वदन्ती
(17)	पृच्छत् (प्रच्छ + शतृ)	+	ङीप्	=	पृच्छन्ती

पाठ्यक्रमानुसार तद्धिताः में मतुप्, त्व, एवं स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय हैं।

❑❑

अध्याय — 4 वाच्य प्रकरणम्

स्मरणीय बिन्दु

वाच्य परिवर्तन–

(1) कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के नियमों के अनुसार ही कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में, कर्मवाच्य को कर्तृवाच्य में एवं भाववाच्य में परिवर्तन करना चाहिए।

(2) पाठ्यक्रम में वाच्य परिवर्तन केवल लट् लकार में कर्तृ-कर्म-क्रिया पर आधारित है।

क्रिया द्वारा किसी भी बात को कहने की विधि वाच्य कहलाती है। संस्कृत भाषा में तीन वाच्य होते हैं–

(i) कर्तृवाच्य (ii) कर्मवाच्य (iii) भाववाच्य

(i) कर्तृवाच्य–जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो अर्थात् क्रिया कर्ता के अनुसार हो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। अर्थात् कर्ता यदि प्रथम पुरुष का हो तो क्रिया भी प्रथम पुरुष की होती है। यदि कर्ता मध्यम पुरुष का हो तो क्रिया भी मध्यम पुरुष की होती है। यदि कर्ता उत्तम पुरुष का हो तो क्रिया भी उत्तम पुरुष की होती है। कर्ता जिस वचन में हो क्रिया भी उसी वचन में होगी।

जैसे–रामः पठति। रमा ग्रामम् गच्छति।

(ii) कर्मवाच्य–जिस वाच्य में कर्म प्रधान हो अर्थात् कर्म के अनुसार क्रिया आए उसे कर्मवाच्य कहते हैं। कर्मवाच्य में कर्ता, तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के अनुसार होती है। कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय जो वचन कर्ता में प्रथमा विभक्ति में हो कर्मवाच्य में वही वचन प्रयोग होगा। इसी प्रकार कर्म (द्वितीया) जिस वचन में हो वह प्रथमा में उसी वचन का प्रयोग होगा।

यथा–देवः विद्यालयं गच्छति-देवेन विद्यालयः गम्यते। त्वम् जलं पिबसि—त्वया जलं पीयते।

(iii) भाववाच्य–अकर्मक क्रियाओं वाले वाक्य में कर्ता की प्रधानता न होकर भाव (क्रिया) की प्रधानता रहती है। क्रिया अकर्मक होने पर कर्तृवाच्य से वाक्य भाववाच्य में परिवर्तित होता है। भाववाच्य में कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा क्रिया हमेशा प्रथम पुरुष एकवचन की होती है। यथा–

(i) कन्यया क्रीडयते।

(ii) रामेण स्मर्यते।

वाच्य तालिका

वाच्यम्	कर्ता	कर्म	क्रिया
कर्तृवाच्यम्	प्रथमा विभक्ति लिंग, पुरुष, वचन कर्तानुसार	द्वितीया विभक्ति	कर्ता के पुरुष व वचन के अनुसार क्रिया के पुरुष व वचन (परस्मैपद/आत्मनेपद)
सकर्मक	विपुलः आशुतोषः सर्वे कामिनी	विद्यालयं गीतां गृहं फलानि	गच्छति। पठति। गच्छन्ति। खादति।
अकर्मक	सा दीक्षा तौ शीतांशुः सः	– – – – –	चलति। नृत्यति। गच्छतः। धावति। हसति।
कर्मवाच्य	तृतीया विभक्ति	प्रथमा विभक्ति लिंग, पुरुष, वचन कर्मानुसार	कर्म के पुरुष तथा वचन के अनुसार क्रिया के पुरुष तथा वचन धातु के साथ 'य' तथा आत्मनेपद के प्रत्यय।
सकर्मक	विपुलेन आशुतोषेण सर्वैः कामिन्या तया	दृश्यः गीता सूर्यः फलानि जलम्	दृश्यते। पठ्यते। नम्यते। खाद्यन्ते। पीयते।
भाववाच्य अकर्मक	तृतीया विभक्ति दीक्षया ताभ्याम् शीतांशुना तेन	– – – – – –	धातु के साथ 'य' तथा आत्मनेपद के प्रथम पुरुष एकवचन के प्रत्यय। नृत्यते। गम्यते। धाव्यते। भूयते।

कर्तृवाच्यात्-कर्मवाच्ये परिवर्तनं (लट्लकार प्रयोगः)

कर्तृवाच्य वाक्य के कर्ता की प्रथमा विभक्ति की कर्मवाच्य वाक्य में तृतीया विभक्ति होती है। कर्तृवाच्य वाक्य के कर्म (द्वितीया विभक्ति) की कर्मवाच्य में प्रथमा विभक्ति होती है। कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के अनुसार तथा कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है तथा आत्मनेपद में होती है।

कर्तृवाच्यम्	**कर्मवाच्यम्**
1. रामः पुस्तकं पठति।	रामेण पुस्तकं पठ्यते।
2. त्वम् जलं पिबसि।	त्वया जलं पीयते।
3. युवां पत्रं लिखथः।	युवाभ्यां पत्रं लिख्यते।
4. पत्रवाहकः पत्रम् आनयति।	पत्रवाहकेन पत्रम् आनीयते।

5. सः बालकः पाठं पठति।	तेन बालकेन पाठः पठ्यते।

कर्मवाच्यात्-कर्तृवाच्ये परिवर्तनम्

कर्मवाच्य वाक्य के कर्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य में प्रथमा विभक्ति हो जाती है। कर्म की द्वितीया विभक्ति होती है। क्रिया के पुरुष, वचन कर्ता के अनुसार होते हैं तथा क्रिया परस्मैपद में होती है।

कर्मवाच्यात्	**कर्तृवाच्ये परिवर्तनम्**
1. बालेन पुस्तकं गम्यते।	बालः पुस्तकं पठति गच्छति।
2. बालकेन गृहं पठयते	बालकः गृहम् गच्छति।
3. बालाभ्यां पत्रं लिख्यते।	बालौ फलानि खादतः।
4. बालैः जलं पीयते।	बालाः जलम् पिबन्ति।
5. बालिकाया दुग्धं पीयते।	बालिका दुग्धं पिबति।

पाठ्यक्रम में केवल लट्लकारे (कर्तृ-कर्म क्रिया) प्रयुक्त हैं।

❑❑

अध्याय — 5 अङ्कानां स्थाने शब्देषु समयलेखनम्

स्मरणीय बिन्दु

समय लेखनम्—

संस्कृत में घड़ी का समय बताने हेतु बजे के लिए 'वादन' शब्द का, सवा के लिए 'सपाद' (स + पाद) का, आधे के लिए 'सार्ध (स + अर्ध) तथा पौने के लिए 'पादोन' (पाद + ऊन) शब्द का प्रयोग होता है।

पाद (Quarter) = 15 मिनट

अर्ध (Half) = आधा घण्टा (30 मिनट)

सपाद (Quarter Past) = सवा

सार्ध (Half Past) = साढ़े

पादोन (Quarter to) = पौने

I. वादन

एकवादनम्
1:00 बजे

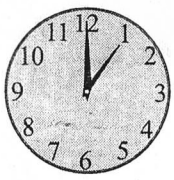

द्विवादनम्
2:00 बजे

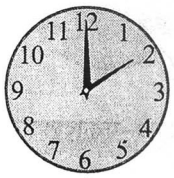

त्रिवादनम्
3:00 बजे

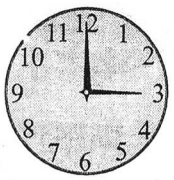

चतुर्वादनम्
4:00 बजे

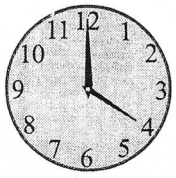

पञ्चवादनम्
5:00 बजे

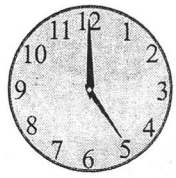

षड्वादनम्
6:00 बजे

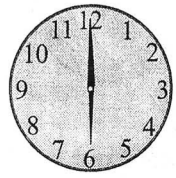

सप्तवादनम्
7:00 बजे

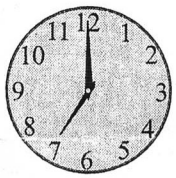

अष्टवादनम्
8:00 बजे

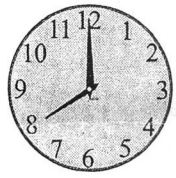

नववादनम्
9:00 बजे

दशवादनम्
10:00 बजे

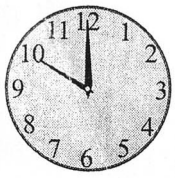

एकादशवादनम्
11:00 बजे

द्वादशवादनम्
12:00 बजे

II. सपाद (सवा) [पाद/चतुर्थांश सहित]

सपाद–चतुर्वादनम्
4:15 बजे

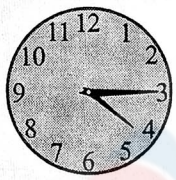

सपाद–पञ्चवादनम्
5:15 बजे

सपाद–षड्वादनम्
6:15 बजे

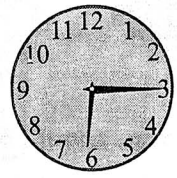

सपाद–सप्तवादनम्
7:15 बजे

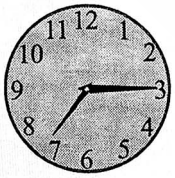

सपाद–अष्टवादनम्
8:15 बजे

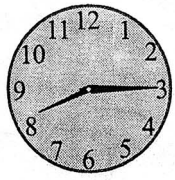

सपाद–नववादनम्
9:15 बजे

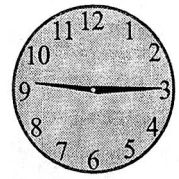

सपाद-दशवादनम्
10:15 बजे

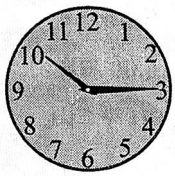

सपाद-एकादशवादनम् (सपादैकादशवादनम्)
11:15 बजे

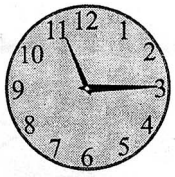

III. सार्ध (साढ़े) [आधे सहित]

सार्ध-द्वादशवादनम्
12:30 बजे

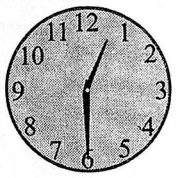

सार्ध-एकवादनम् (सार्धैकवादनम्)
1:30 बजे

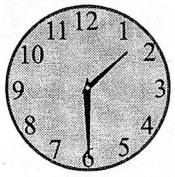

सार्ध-द्विवादनम्
2:30 बजे

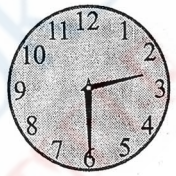

सार्ध-त्रिवादनम्
3:30 बजे

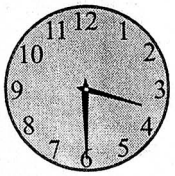

सार्धचतुर्वादनम्
4:30 बजे

सार्ध-पञ्चवादनम्
5:30 बजे

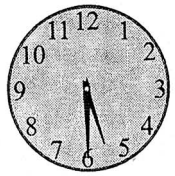

सार्ध-षड्वादनम्
6:30 बजे

सार्ध-सप्तवादनम्
7:30 बजे

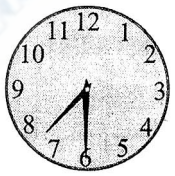

सार्ध-अष्टवादनम् (सार्धाष्टवादनम्)
8:30 बजे

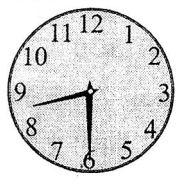

IV. पादोन—एक चौथाई भाग कम होने पर पादोन प्रयुक्त किया जाता है। हिन्दी में इसे पौने कहते हैं जैसे-पौने चार, पौने पाँच, पौने छः, पौने सात आदि। पाद = चौथाई, ऊन = कम, एक चौथाई कम पादोन होता है।

पादोन–चतुर्वादनम्
3:45 बजे

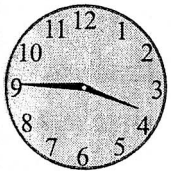

पादोन–पञ्चवादनम्
4:45 बजे

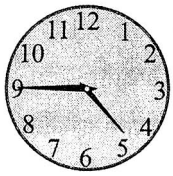

पादोन–षड्वादनम्
5:45 बजे

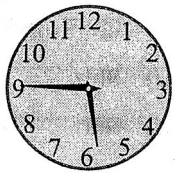

पादोन–सप्तवादनम्
6:45 बजे

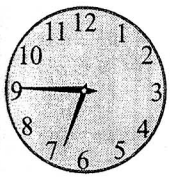

पादोन–अष्टवादनम् (पादोनाष्टवादनम्)
7:45 बजे

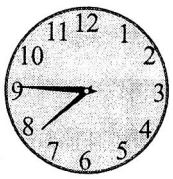

पादोन–नववादनम्
8:45 बजे

पादोन–दशवादनम्
9:45 बजे

पादोन–द्वादशवादनम्
11:45 बजे

❑❑

अध्याय — 6 अव्ययपदानि

स्मरणीय बिन्दु

अव्यय—

(1) अव्यय हमेशा विकार रहित होता है, इसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं होता है।

(2) यह तीनों लिङ्गों में, सभी विभक्ति में और तीनों वचनों में एकसमान ही होता है।

अव्यय (अविकारी) वे शब्द हैं जो तीनों लिङ्गों में, तीनों वचनों में सभी विभक्तियों में एक जैसे रहते हैं। 'न व्ययेति' इति अव्ययम् अर्थात् जो खर्च नहीं होते वे ही अविकारी या अव्यय शब्द कहलाते हैं।

'सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वासु च विभक्तिषु।
सर्वेषु च वचनेषु, यन्न व्ययेति तदव्ययम्।।

ये अव्यय कई प्रकार के होते हैं। यथा—क्रियाविशेषण, उपसर्ग, निपात, संयोजक, विस्मयसूचक।

1. **क्रिया-विशेषण**—कुछ संज्ञा शब्दों के नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा एकवचन तथा अन्य विभक्तियों के रूप क्रिया-विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं।

   यथा–चिरं, चिरेण, दूरं, दूरेण, नानाविधम्, अत्र, तत्र, परितः।

2. **उपसर्ग**—उपसर्ग 22 होते हैं यथा—प्र, परा, अप, सम्, ... आदि।

3. **निपात**—ये अर्थ पर बल देने वाले होते हैं–
   यथा—खलु, नु, तु, किल।
4. **संयोजक**—कुछ अव्यय जोड़ने का काम करते हैं; यथा—च, वा, अथ, किन्तु, आदि।
5. **विस्मय सूचक**—कुछ विस्मय सूचक अव्यय होते हैं; यथा—हन्त, हा, धिक्, कष्ट, भो, हे, अहो आदि।
6. **प्रकीर्ण**—इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे अव्यय होते हैं जो गति, काल, स्थान, क्रम, समय, अवस्था, दिशा, प्रक्रिया आदि का संकेत देते हैं; यथा—पुनः, यथा, उच्चैः, नीचैः।

वर्गीकरण

समय बोधकानि	**स्थान बोधकानि**	**प्रश्न बोधकानि**	**प्रकीर्णानि**
यदा-तदा, अधुना, ह्यः श्वः, पुरा	अत्र, यत्र-तत्र	कदा, कुतः, किमर्थम् कुत्र	इति, इव चित् /चन /मा, / यत्-यावतः, तावत्, कदापि, वृथा आदि

यद्यपि अव्यय अनेक हैं, लेकिन निम्नलिखित अव्यय मुख्य हैं–

(1) **अपि**—(भी)—अहम् **अपि** गृहं गमिष्यामि।

(2) **इव**—(की तरह / जैसा / समान)—अभिमन्युः अपि अर्जुनः **इव** वीरः आसीत्।

(3) **उच्चैः**—(ऊँचे)—कपोतः **उच्चैः** न गच्छति।

(4) **एव**—(ही)—रामः **एव** गच्छति।

(5) **नूनम्**—(निश्चय ही)—अद्य **नूनमेव** वृष्टिर्भविष्यति।

(6) **पुरा**—(पहले / प्राचीन काल में)—**पुरा** एकः सत्यवादी नृपः आसीत्।

(7) **इतस्ततः**—(इधर-उधर)—सः **इतस्ततः** क्रीडति।

(8) **अत्र-तत्र**—(यहाँ-वहाँ)—**अत्र** शुकाः वदन्ति। **तत्र** पठनाय गच्छ।

(9) **इदानीम्**—(अभी)—**इदानीम्** वृष्टिः भवति।

(10) **यथा—तथा**—(जैसे-वैसे)—**यथा** राजा **तथा** प्रजा।

(11) **विना**—(बगैर / के बिना)—सीता रामं **विना** वनं न गच्छति।

(12) **सहसा**—(अचानक)—**सहसा** मृगम् अपश्यम्।

(13) **अधुना**—(अब)—**अधुना** त्वं पठ।

(14) **वृथा**—(बेकार)—**वृथा** मा वद।

(15) **शनैः**—(धीरे)—वृद्धः **शनैः** चलति।

(16) **इति**—किसी के द्वारा बोले गए शब्दों को उसी प्रकार प्रयुक्त करने के लिए,
उपसंहार द्योतकः—पयः ददाति **इति** पयोदः।

(17) **कदा**—कब—रामः **कदा** गमिष्यति?

(18) **कुतः**—कहीं से, किधर से—भवान् **कुतः** गमिष्यति?

(19) **मा**—मत, प्रायः लोट् लकार के साथ—त्वम् **मा** वद।

(20) **यत्**—कि, चूँकि, क्योंकि—रामः अवदत् **यत्** अहं विद्यालयं गमिष्यामि।

(21) **यत्र-कुत्र**—जहाँ-कहाँ—**यत्र** कृष्णः **कुत्र** पराजयः?

(22) **सम्प्रति**—अब—**सम्प्रति** किम् भविष्यति?

(23) यदा-कदा—जब-कब—अहम् **यदा-कदा** एव दिल्लीनगरम् गच्छामि।

(24) श्वः—आने वाला कल—अहम् **श्वः** विद्यालयम् न आगमिष्यामि।

(25) ह्यः—बीता हुआ कल—**ह्यः** त्वम् कुत्र आसीः?

(26) बहिः—बाहर (अपादान के साथ भी)—ग्रामाद् **बहिः** देवालयः अस्ति।

(27) कदापि—कभी, किसी समय—अहम् **कदापि** असत्यं न वदिष्यामि।

(28) किमर्थम्—किसलिए—त्वम् **किमर्थम्** हससि?

(29) यावत्—जब तक—**यावत्** अहम् पठामि तावद् त्वम् लिख।

(30) कुत्र—कहाँ—त्वं **कुत्र** गच्छसि?

पाठ्यक्रमान्तर्गत निम्नलिखित अव्यय हैं—

उच्चैः, च, श्वः, ह्यः, अद्य, अत्र-तत्र, यत्र-कुत्र, इदानीम्, अधुना, सम्प्रति, साम्प्रतम्, यदा, तदा, कदा, सहसा, वृथा, शनैः, अपि कुतः, इतस्ततः, यदि-तर्हि, यावत्-तावत्

❑❑

अध्याय — 7 अशुद्धि-संशोधनम्

स्मरणीय बिन्दु

वचन-लिङ्-पुरुष-लकार-विभक्ति दृष्ट्या संशोधनम्—

(क) अधोलिखित वाक्यानि शुद्धं कुर्वन्तु—

1. कर्ता क्रिया-सम्बन्धः अशुद्धयः

1. सः गृहं गच्छसि। 2. त्वं मोहनस्य शत्रुः अस्ति।
3. तौ पाठं पठति। 4. यूयम् संस्कृतं पठामि।

उत्तराणि—1. गच्छति **2.** अस **3.** (स) पठतः **4.** (अ) पठथ

2. विशेषण सम्बन्धः अशुद्धयः

1. मनोहरं बालः गच्छति। 2. तत् धेनुः कस्य अस्ति।
3. गंगायाः जलं पवित्रः अस्ति। 4. योग्यः मित्रं पठति।

उत्तराणि—1. मनोहरः **2.** (ब) सा **3.** (स) पवित्रम्ः **4.** (अ) योग्यम्

3. वाच्य सम्बन्धः अशुद्धयः

1. सः ग्रामः गम्यते। 2. अहम् चिन्तितम्।
3. सः चित्रं दृष्टम्। 4. त्वया पुस्तकं पठसि।

उत्तराणि—1. मया **2.** (ब) मया **3.** (स) तेन **4.** (अ) पठ्येत्

4. विभक्ति सम्बन्धः अशुद्धयः

1. मार्गस्य उभयतः वृक्षाः सन्ति।
2. सर्वेषां स्वस्ति।
3. सः सिंहेन विभेति।
4. त्वं मां सह कुत्र गन्तुम् इच्छसि?

उत्तराणि–1. मार्गम् **2.** (ब) सर्वेभ्यः **3.** (स) सिंहात **4.** (अ) मया

❑❑

पठितावबोधनम्
(15 अङ्काः)

अध्याय — 8 प्रश्न निर्माणम्

स्मरणीय बिन्दु

1. किम् सर्वनाम के तीनों लिङ्गों में शब्द रूप के अनुसार ही प्रश्नवाचक शब्द का प्रयोग करें।
2. रेखाङ्कित शब्द के लिए ही विकल्प का चुनाव करें।

❑❑

अध्याय — 9 प्रसङ्गानुसारम् अर्थचयनम्

स्मरणीय बिन्दु

1. छात्रों को वाक्य के रेखांकित शब्दों अथवा दिए गए शब्दों का अर्थ भली-भाँति स्पष्ट होना चाहिए। उसमें किसी प्रकार का संशय नहीं होना चाहिए तभी वे सही विकल्प चुन सकेंगे।
2. पर्याय शब्दों के विकल्प चुनते समय ध्यान रखना चाहिए कि वह विकल्प वाक्यानुसार भी हो।

❑❑

अध्याय — 10 भाषिककार्यम् तत्वानि (पाठाधारितानि)

स्मरणीय बिन्दु

1. छात्रों को वाक्य के रेखांकित शब्दों अथवा दिए गए शब्दों का अर्थ भली-भाँति स्पष्ट होना चाहिए। उसमें किसी प्रकार का संशय नहीं होना चाहिए तभी वे सही विकल्प चुन सकेंगे।
2. पर्याय, विशेषण-विशेष्य सर्वनाम, वाक्ये कर्तृ-क्रिया पद शब्दों के विकल्प चुनते समय ध्यान रखना चाहिए कि वह विकल्प वाक्यानुसार भी हो।

❑❑